भारत-फ्रांस सम्बंध: नए आयामों की तलाश

*डॉ. दिनोज कुमार उपाध्याय**

फ्रांस के राष्ट्रपति इमैनुअल मैक्रों 9 से 12 मार्च, 2018 तक भारत की राजकीय यात्रा पर थे। इस दौरे में भारत और फ्रांस के बीच द्विपक्षीय, क्षेत्रीय तथा वैश्विक महत्व के मुद्दों पर व्यापक बातचीत हुई। दोनों देशों ने द्विपक्षीय तथा बहुपक्षीय सहयोग बढ़ाने के लिए महत्वपूर्ण अवसरों की तलाश की। भारत और फ्रांस के बीच नवीकरणीय ऊर्जा, स्मार्ट सिटी, परमाणु ऊर्जा, पर्यावरण तथा दीर्घकालीन विकास, रेलवे, नशीले पदार्थों की रोकथाम समेत 14 समझौते हुए। भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और राष्ट्रपति मैक्रों 11 मार्च 2018 को नई दिल्ली में आयोजित अंतरराष्ट्रीय सौर गठबंधन (आईएसए) संस्थापना सम्मेलन के सह-अध्यक्ष थे, जिसमें 23 देशों की सरकारें और राष्ट्राध्यक्ष शामिल हुए। राष्ट्रपति मैक्रों ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के संसदीय क्षेत्र वाराणसी का भी दौरा किया तथा कई कार्यक्रमों में भाग लिया।

भारत और फ्रांस के बीच सक्रिय तथा बहुआयामी सम्बंध हैं। 1998 में दोनों देशों ने रणनीतिक साझेदारी समझौते पर हस्ताक्षर किए थे। उच्च राजनीतिक स्तर पर नियमित बातचीत, व्यापक रक्षा सहयोग तथा सक्रिय सांस्कृतिक सम्पर्क ने इस साझेदारी को अधिक परिपक्व बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। बहु-ध्रुवीय विश्व व्यवस्था पर विचारों का अभिसरण तथा अंतरराष्ट्रीय चुनौतियों से निपटने के लिए बहुपक्षवाद की अवधारणा दोनों देशों के बीच वैश्विक स्तर पर सामंजस्यपूर्ण राजनीतिक तालमेल विकसित करने में मदद करती है।

बदलते क्षेत्रीय और वैश्विक परिवेश के बीच भारत तथा फ्रांस अपने सम्बंधों को विस्तार दे रहे हैं। भारत यात्रा के दौरान राष्ट्रपति मैक्रों ने महसूस किया कि अगर ब्रिटेन यूरोपीय संघ से बाहर निकलता है, तो यूरोप के साथ भारत के सम्बंधों में परिवर्तन आएगा। उन्होंने नई दिल्ली

से ब्रिटेन को "यूरोप के प्रवेशद्वार" के रुप में इस्तेमाल करने के बजाय फ्रांस को "यूरोप में भारत का सबसे अच्छा साथी" बनाने की इच्छा जाहिर की। उन्होंने कहा, "यूरोप में ब्रिटेन आपका ऐतिहासिक साझेदार रहा है और मैं चाहता हूं कि फ्रांस नया साझेदार बन जाए।" उन्होंने ये भी कहा कि " मेरी यात्रा का पहला उद्देश्य इस दशक में दो लोकतंत्रों के बीच क्षेत्र में सामूहिक सुरक्षा के मामले में एक मजबूत गठबंधन सुनिश्चित करना है।" फ्रांसीसी राष्ट्रपति मैक्रों की इच्छा भारत-फ्रांस सम्बंधों में "विश्वास की गहरी भावना और आपसी तालमेल" दर्शाती है।

ऐसा प्रतीत होता है कि भारत यूरोप के राजनीतिक तथा आर्थिक परिदृश्यों में परिवर्तनों पर मंथन कर रहा है। नई दिल्ली 'मेक इन इंडिया', 'डिजिटल इंडिया', 'स्किल इंडिया', 'स्वच्छ भारत' जैसे कार्यक्रमों के लिए आर्थिक विकास, आधारभूत संरचना विकास, निवेश तथा तकनीकी सहायता के उद्देश्य से यूरोपीय देशों से अधिक सहयोग की अपेक्षा रखती है। जलवायु परिवर्तन, अंतरराष्ट्रीय आतंकवाद, व्यापार संरक्षणवाद तथा वैश्वीकरण के खतरों समेत वैश्विक चुनौतियों से प्रभावी ढंग से निपटने में यूरोप के साथ भारत का सहयोग भी महत्त्वपूर्ण है। इसी तरह, भारत तथा फ्रांस मूलभूत ढांचे और सामाजिक-आर्थिक कार्यक्रमों की सुविधा के लिए अपसी सहयोग की पहल कर रहे हैं। फ्रांसीसी कंपनियों ने इन कार्यक्रमों में रुचि दिखाई है। फ्रांस के साथ रक्षा सहयोग भारत-प्रशांत क्षेत्र में सामरिक सक्रियता में परिवर्तन के लिए काफी महत्त्वपूर्ण माना जाता है। मिसाइल प्रौद्योगिकी नियंत्रण व्यवस्था (एमटीसीआर), वासेनर अरेंजमेंट तथा ऑस्ट्रेलिया समूह जैसे महत्त्वपूर्ण बहुपक्षीय मंचों में भारत के प्रवेश के लिए फ्रांसीसी समर्थन काफी महत्त्वपूर्ण रहा है। फ्रांस संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की स्थायी सदस्यता तथा एनएसजी की सदस्यता के लिए भारत की दावेदारी का भी समर्थन कर रहा है।

रक्षा सहयोग में मजबूती

रक्षा सहयोग भारत-फ्रांस रणनीतिक साझेदारी का एक महत्त्वपूर्ण पहलू है। भारत, फ्रांस को 'सबसे विश्वसनीय रक्षा भागीदारों में से एक' मानता है। भारत तथा फ्रांस के बीच रक्षा प्रमुखों के स्तर पर नियमित यात्राओं का आदान-प्रदान भी होता रहा है। दोनों देशों के बीच थल सेना के क्षेत्र में शक्ति, नौसेना के वरुण तथा वायु सेना के गरुड़ जैसे नियमित रक्षा अभ्यास भी होते हैं। रक्षा प्रमुख स्तर की वार्ता के अलावा, रक्षा सहयोग के लिए दोनों देशों की एक उच्च समिति है, जिसकी रक्षा सचिव तथा अंतरराष्ट्रीय संबंध और रणनीति निदेशालय के फ्रांसीसी महानिदेशक के स्तर पर सालाना बैठक होती है। दोनों देशों के बीच कई तरह के रक्षा पाठ्यक्रम, प्रशिक्षण कार्यक्रम आदि नियमित रूप से चलते हैं। राष्ट्रपति मैक्रों की भारत यात्रा से पहले, फ्रांस की रक्षा मंत्री फ्लोरेंस पारली ने रक्षा तथा सुरक्षा सम्बंधों को मजबूत करने के उद्देश्य से नई दिल्ली का दौरा किया। इस दौरान दोनों के बीच महत्त्वपूर्ण वार्ता हुई। रक्षा मंत्री पारली ने भारतीय समकक्ष

निर्मला सीतारमण के साथ सैन्य प्लेटफार्मों, समुद्री सहयोग, क्षेत्रीय सुरक्षा की स्थिति तथा विभिन्न रक्षा परियोजनाओं के लिए महत्त्वपूर्ण प्रौद्योगिकी के हस्तांतरण जैसे कई मुद्दों पर चर्चा की। राष्ट्रपति मैक्रों की यात्रा के दौरान भारत तथा फ्रांस ने सुरक्षा सम्बंधों में विस्तार की महत्त्वपूर्ण पहल की।

भारत तथा फ्रांस ने हिंद महासागर क्षेत्र में सहयोग के लिए । ज्वायंट स्ट्रैटेजिक विजन जारी किया। । ज्वायंट स्ट्रैटेजिक विजन में हिंद महासागर के लिए भारत तथा फ्रांस के रणनीतिक महत्त्व का जिक्र है। इसमें दोनों देशों ने समुद्री यातायात की चुनौतियों जैसे आतंकवाद तथा समुद्री डाकू, सभी देशों की ओर से अंतरराष्ट्रीय कानून का सम्मान, संगठित अपराध, गैर कानूनी व्यापार, तस्करी तथा अवैध मछली पकड़ने के विरुद्ध लड़ने, जलवायु परिवर्तन का मुकाबला करने एवं सुरक्षा, प्राकृतिक आपदाओं आदि से जुड़े आपसी हितों का प्रावधान है। दोनों देश अपनी नौसेना तथा थल सेना के बीच सैन्य तंत्र में सहायता और सहयोग बढ़ाने पर भी सहमत हुए। ज्वायंट स्ट्रैटेजिक विजन के अनुसार फ्रांस तथा भारत हर अवसर पर अपने नौसैनिक जहाजों का उपयोग करने के लिए प्रतिबद्ध हैं, जिन्हें एक दूसरे के बंदरगाहों पर युद्धाभ्यास (पीएएसईएसएक्स) के लिए बुलाते हैं। नई दिल्ली तथा पेरिस अभ्यास में भाग लेने के लिए क्षेत्र के रणनीतिक साझेदार देशों को आमंत्रित करने के लिए स्वतंत्र होंगे। प्रधानमंत्री मोदी ने पारस्परिक सैन्यतंत्र सहयोग समझौते का उल्लेख भारत-फ्रांस रक्षा सहयोग के इतिहास में 'सुनहरे अवसर' के रुप में किया।

भारत तथा फ्रांस ने 2016 के 36 राफेल लड़ाकू विमानों की आपूर्ति के सौदे पर हस्ताक्षर किए। प्रधानमंत्री मोदी और राष्ट्रपति मैक्रों ने राफेल लड़ाकू विमानों के अधिग्रहण में प्रगति पर संतोष व्यक्त किया। खबरों के अनुसार, पहले लड़ाकू विमान के 2019 तक भारत आने की संभावना है। दोनों नेताओं ने भारत में निर्मित पहली स्कॉर्पियन पनडुब्बी आईएनएस कलवरी का कार्यारम्भ करने पर भी ध्यान दिया। इसका निर्माण भारतीय नौसेना के "प्रोजेक्ट 75" कार्यक्रम के अन्तर्गत मझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड ने फ्रांसीसी शिपबिल्डर नौसेना ग्रुप के साथ मिलकर किया है। भारत, रक्षा सहयोग तथा स्वदेशी रक्षा विनिर्माण आधार को मजबूत करने के लिए रक्षा क्षेत्र में ज्यादा फ्रांसीसी निवेश चाहता है। भारत तथा फ्रांस ने ऐतिहासिक रूप से संयुक्त रक्षा परियोजनाओं को सफलतापूर्वक लागू किया है। भारतीय मिसाइल निर्माता बीडीएल ने फ्रांस के सहयोग से 10,000 से ज्यादा एंटी टैंक मिलान मिसाइलों का निर्माण किया है। फ्रांस के सहयोग से एचएएल हल्के हेलीकॉप्टर चीता तथा चेतक का उत्पादन कर रहा है। वहीं, 'प्रोजेक्ट-75' अनुबंध के अन्तर्गत छह स्कॉर्पियन पनडुब्बियां निर्माणाधीन हैं। फ्रांस का सफ्रान तथा भारत का डीआरडीओ लड़ाकू विमान के इंजनों पर सहयोग के लिए वार्ता कर रहे हैं।

राजनीतिक सक्रियता और पहले के सफल सहयोग भारत तथा फ्रांस को रक्षा विनिर्माण, संयुक्त अनुसंधान और विकास को विस्तार देने के लिए प्रोत्साहित कर रहे हैं। साझा बयान से स्पष्ट था कि प्रधानमंत्री मोदी तथा राष्ट्रपति मैक्रों "वर्तमान रक्षा विनिर्माण साझेदारी को विस्तार देने तथा मजबूत बनाने के लिए तत्पर हैं।" दोनों ने माना कि भारत में 'मेक-इन-इंडिया' रक्षा उपकरणों के सह-विकास तथा सह-उत्पादन भारतीय एवं फ्रांसीसी रक्षा उद्यमों को अवसर प्रदान करते हैं। इनमें जानकारियों तथा प्रौद्योगिकियों का हस्तांतरण भी शामिल है।

आर्थिक संबंधों का विस्तार

फ्रांस के साथ भारत की आर्थिक भागीदारी महत्त्वपूर्ण है। हालांकि, भारत-फ्रांस सम्बंधों की आर्थिक क्षमता का पूरा इस्तेमाल होना अभी बाकी है। 2016 में दोनों देशों का कुल व्यापार 858 करोड़ यूरो का था, जो पिछले साल की तुलना में 0.49 प्रतिशत अधिक था। 2017 में द्विपक्षीय व्यापार में सकारात्मक संकेत दिखा। भारत में फ्रांसीसी कंपनियों की काफी महत्त्वपूर्ण उपस्थिति है। भारत में करीब 1000 फ्रांसीसी कंपनियां काम कर रही हैं। इनका कुल कारोबार 2000 करोड़ अमेरिकी डॉलर है, जिनमें 3,00,000 लोगों को रोजगार मिला है। फ्रांस में लगभग 120 भारतीय कंपनियां उपस्थित हैं और उनका अनुमानित निवेश 100 करोड़ यूरो है। फ्रांस, भारत में नौवां सबसे बड़ा विदेशी निवेशक है। अप्रैल 2000 से मई 2016 के बीच भारत में फ्रांस का संचयी निवेश 515 करोड़ अमेरिकी डॉलर रहा, जो सकल प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (एफडीआई) का 1.5 प्रतिशत था। भारतीय तथा फ्रांसीसी अर्थव्यवस्थाओं को ताकत तथा सहयोग के दृष्टिकोण से देखा जाए, तो भारत, फ्रांस को काफी कम निर्यात करता है, जो फ्रांस के कुल आयात का महज 1.06 प्रतिशत है। 2015 में सेवा क्षेत्रों में द्विपक्षीय व्यापार 341 करोड़ यूरो था।

भारत तथा फ्रांस दोनों आर्थिक सुधारों की दिशा में आगे बढ़ रहे हैं। भारत में कारोबारी वातावरण में लगातार सुधार हो रहा है। 2017 में लागू वस्तु तथा सेवा कर 120 करोड़ की आबादी का एकल तथा एकीकृत बाजार बनाता है। भारत का उद्देश्य निर्यात-संचालित विकास को प्रोत्साहित करने के लिए वैश्विक व्यापार को 2025 तक सकल घरेलू उत्पाद का 40 प्रतिशत तक बढ़ाना है। फ्रांस में राष्ट्रपति मैक्रों ने मजदूर संगठनों के विरोध प्रदर्शनों तथा हड़तालों के बावजूद श्रम और कर सुधारों को लागू किया है। राष्ट्रपति मैक्रों खुले तथा प्रतिस्पर्धी फ्रांस की वकालत करते हैं। दोनों देश आर्थिक सम्बंधों के विस्तार के लिए आर्थिक क्षमता का भरपूर उपयोग करने के इच्छुक हैं। भारत तथा फ्रांस ने साक्षा बयान में 2022 तक वस्तु व्यापार को 1500 करोड़ यूरो तक बढ़ाने के लक्ष्य के साथ विकास की गति को बनाए रखने की इच्छा जाहिर की। लघु तथा मध्यम (एसएमईज़) और मझोले आकार की कंपनियों को दोनों देशों के बीच आर्थिक तथा वाणिज्यिक आदान-प्रदान में बड़ी भूमिका निभाने के लिए प्रोत्साहित किया

जाना चाहिए। व्यावसायिक समूह तथा बहुराष्ट्रीय कंपनियां सहयोग और निवेश के अवसरों के लिए उत्सुकता से मार्ग तलाश रही हैं। फ्रांस की प्रमुख कंपनियां गोबेन, वेओलिया, मिशलिन, कैपजेमिनी, सानोफी, ईडीएफ, एयरबस, लैक्टालिस, सोडेक्सो, टोटल, रेनॉल्ट, सेंट भारत में व्यापार बढ़ाने को इच्छुक हैं। अल्सटॉम को बिहार के मधेपुरा में 800 लोकोमोटिव बनाने के लिए 320 करोड़ यूरो की प्रमुख परियोजना मिली है। भारत की रिलायंस, टाटा, महिंद्रा तथा अन्य बड़ी कंपनियों ने रक्षा क्षेत्र में डसॉल्ट, एसएएफआरएन, थाल्स और दूसरी बड़ी फ्रांसीसी कंपनियों के साथ साक्षा सहयोग के लिए समझौता किया है। फ्रांस की मूलभूत संरचना कंपनियों को स्मार्ट शहरों तथा अक्षय ऊर्जा समेत अन्य भारतीय परियोजनाओं में प्रमुख अवसरों से भरपूर आशाएं हैं। उदाहरण के लिए, भारत यात्रा के दौरान राष्ट्रपति मैक्रों ने उत्तर प्रदेश के मिर्जापुर जिले में एक सौर ऊर्जा संयंत्र का उद्घाटन किया। फ्रांसीसी कंपनी ने 500 करोड़ रुपये की लागत से 75 मेगावॉट के सौर संयंत्र का निर्माण किया है, जो 118600 सौर पैनल के साथ राज्य का सबसे बड़ा सौर संयंत्र है।

अंतरिक्ष सहयोग

भारत-फ्रांस सम्बंधों में अंतरिक्ष सहयोग को 'अद्वितीय' तथा 'ऐतिहासिक' माना जाता है। दोनों ने मिलकर अंतरिक्ष विज्ञान, तकनीकी तथा प्रयोगों के क्षेत्र में विभिन्न पहलुओं को नई ऊंचाइयां दी हैं। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) तथा फ्रांसीसी राष्ट्रीय अंतरिक्ष एजेंसी (सीएनईएस) ने सफलतापूर्वक दो अंतरिक्ष मिशन को अंजाम दिया है। राष्ट्रपति मैक्रों की यात्रा के दौरान भारत तथा फ्रांस ने अंतरिक्ष सहयोग के लिए एक ज्वायंट विज़न जारी किया। भारत तथा फ्रांस अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी से सामाजिक लाभ पाने, वैश्विक चुनौतियों से निपटने और सौर मंडल की खोज आदि पर सहमत हैं। वो अंतरिक्ष सुरक्षा, बचाव तथा स्थायित्व समेत सामान्य महत्त्व के अंतरराष्ट्रीय मुद्दों पर सहयोग बढ़ाने पर भी राजी हुए।

सांस्कृतिक सहयोग

आज की दुनिया में सांस्कृतिक बातचीत, लोगों का एक-दूसरे से संपर्क, प्रवासन, गतिशीलता, पर्यटन आदि का अधिक महत्त्व है। लोगों की एक दूसरे से उत्साहपूर्ण वार्ता तथा पर्यटन ना सिर्फ राजनीतिक सम्बंधों को मजबूत करते हैं, बल्कि स्थानीय अर्थव्यवस्था के विकास में भी योगदान देते हैं। प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि "हमारे द्विपक्षीय सम्बंधों के उज्ज्वल भविष्य के लिए सबसे महत्त्वपूर्ण आयाम हमारी जनता, विशेषकर युवाओं का एक दूसरे से सम्पर्क है।" 2016 में फ्रांस के 41 शहरों में भारतीय संस्कृति तथा कला को दर्शाने के लिए "नमस्ते फ्रांस" का आयोजन किया गया। वहीं, 33 भारतीय शहरों में 'बोनजोर इंडिया' भी आयोजित हुआ।

भारत तथा फ्रांस ने प्रवासन एवं गतिशीलता पर द्विपक्षीय साझेदारी समझौते पर हस्ताक्षर किए, जो दोनों देशों के बीच छात्रों तथा व्यवसायियों के आवागमन को और अधिक समय तक प्रवास की शर्तों को सरल बनाने की सुविधा मुहैया कराएगा। फ्रांस की पहल पर युवाओं के आदान-प्रदान को प्रोत्साहन देने के उद्देश्य से "भविष्य के लिए फ्रांस-भारत कार्यक्रम" तैयार किया गया, जो भारत-फ्रांस सम्बंधों के भविष्य के विकास के लिए उपयोगी है।

भारत तथा फ्रांस पर्यटन को प्रोत्साहन देना चाहते हैं। 2017 में भारत आनेवाले विदेशी पर्यटकों की संख्या में 15.7 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई। 2017 के पहले सात महीनों में लगभग 56 लाख 70 हजार विदेशी सैलानी आए, जबकि 2016 में इसी अवधि में 49 लाख मेहमान आए थे। फ्रांस दुनिया के सबसे आकर्षक जगहों में एक है। वो अधिक से अधिक पर्यटकों को आकर्षित करने का इच्छुक है। भारत तथा फ्रांस ने एक-दूसरे के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए बॉलीवुड की भी मदद ली है।

भारत, फ्रांस के क्षेत्रीय तथा वैश्विक मुद्दे

भारत तथा फ्रांस ने ईरान परमाणु समझौता, सीरियाई संकट तथा वैश्विक सम्पर्क परियोजनाओं समेत क्षेत्रीय तथा वैश्विक महत्त्व के कई विषयों पर चर्चा की। दोनों देशों ने 2015 के ईरान और ई3+3 देशों से हुए संयुक्त व्यापक योजना (जिसे जेसीपीओए, ईरान परमाणु समझौते के रूप में जाना जाता है) को पूरी तरह से लागू करने का समर्थन किया। भारत तथा फ्रांस ने सीरियाई संघर्ष के व्यापक एवं शांतिपूर्ण समाधान के लिए 'सर्व समावेशी सीरियाई नेतृत्व वाली राजनीतिक प्रक्रिया' का समर्थन किया।फ्रांसीसी राष्ट्रपति मध्य पूर्व में मध्यस्थता के साथ-साथ संकटों को दूर करने में सक्रिय रहे हैं। साक्षा बयान वैश्विक सम्पर्क परियोजनाओं के महत्त्व को रेखांकित करता है। जनवरी 2018 में राष्ट्रपति मैक्रों ने चीन यात्रा की। चाइना डॉट ओआरजी डॉट सीएन से एक साक्षात्कार में राष्ट्रपति मैक्रों ने कहा कि "यह (सम्पर्क) यूरेशियाई क्षेत्र की संरचना में एक प्रमुख भूमिका निभा सकता है तथा प्राचीन **सिल्क रूट** की तरह देशों और सभ्यताओं के बीच विनिमय के माध्यम से पुलों की तरह वास्तविक अवसर प्रदान करता है। यूरोप तथा एशिया के बीच बेहतर सम्पर्क का काम भी महत्त्वपूर्ण है। उन्होंने कहा, "फ्रांस इसमें एक प्रमुख भूमिका निभाने को तैयार है। हमें यूरोप, एशिया तथा तीसरी दुनिया के देशों में एक साथ लागू करने के लिए ठोस परियोजनाओं की पहचान करनी होगी।" उन्होंने शीआन में भी कहा, "प्राचीन **सिल्क रूट** कभी सिर्फ चीन का नहीं था।" उन्होंने आगे कहा, कि "परिभाषा के अनुसार, इन सड़कों को केवल साझा किया जा सकता है। सड़कें कभी एकतरफा नहीं हो सकतीं।"

भारत-फ्रांस के साझा बयान ने वैश्विक दुनिया में सम्पर्क के महत्त्व को स्वीकार किया है। यह 'अंतरराष्ट्रीय मानदंडों, सुशासन, कानून के सिद्धांत, खुलेपन, पारदर्शिता, सामाजिक तथा पर्यावरणीय मानकों, वित्तीय जिम्मेदारी के सिद्धांत, उत्तरदायी ऋण-वित्त पोषण प्रथाओं' तथा सम्पर्क पहल के आधार के प्रमुख सिद्धांतों को रेखांकित करते हैं। यह आगे उल्लेख करता है कि सम्पर्क परियोजनाओं को "इस प्रकार जारी रखना चाहिए, जो संप्रभुता तथा क्षेत्रीय अखंडता का सम्मान करता हो।" यूरोपीय संघ ने अंतरराष्ट्रीय सम्पर्क परियोजनाओं के लिए इन सिद्धांतों में कुछ को चिन्हित किया है। यूरोपीय आयोग के उपाध्यक्ष जर्की कैटाइनन ने एशिया तथा यूरोप को जोड़ने वाली योजना में वर्तमान नियमों तथा नीतियों, पारदर्शिता एवं स्थायित्व, बाजार नियमों तथा अंतरराष्ट्रीय मानकों के आधार पर खुलेपन के सिद्धांतों पर जोर दिया।

निष्कर्ष

भारत तथा फ्रांस बहुआयामी एवं सक्रिय रणनीतिक भागीदारी साझा करते हैं। दोनों के राजनीतिक सम्बंध उत्साहपूर्ण हैं। दोनों के बीच रक्षा सहयोग मजबूती के साथ आगे बढ़ रहा है तथा अर्थव्यवस्था पारस्परिक साझेदारी के लिए अधिक अवसर प्रदान करती है। भारत के मूलभूत ढांचों का विकास तथा सामाजिक-आर्थिक कार्यक्रम अधिक तकनीकी सहयोग एवं निवेश के लिए दीर्घकालिक अवसर उपलब्ध कराते हैं। विशेषकर युवाओं को ध्यान में रखते हुए सांस्कृतिक वार्ता का विस्तार दोनों देशों के बारे में सामाजिक समझ विकसित करने में योगदान देगी। राष्ट्रपति मैक्रों की यात्रा ने राजनीतिक, आर्थिक तथा रक्षा क्षेत्रों में द्विपक्षीय सहयोग के विस्तार में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। दोनों देशों के साथ-साथ प्रधानमंत्री मोदी तथा राष्ट्रपति मैक्रों के बीच पारस्परिक तालमेल से माना जा सकता है कि भविष्य में द्विपक्षीय सम्बंध अधिक स्थायी तथा प्रगाढ़ होंगे। दोनों देशों ने हिंद महासागर में उभरती चुनौतियों से निपटने के लिए सहयोग में विस्तार के लिए कदम उठाए हैं। हिंद महासागर में शांति तथा समृद्धि सुनिश्चित करने के लिए अंतरराष्ट्रीय मानदंडों एवं नियमों का सम्मान महत्त्वपूर्ण है। इस क्षेत्र में शांति तथा समृद्धि सुनिश्चित करने के लिए सैन्य सहयोग पर भारत-फ्रांस समझौते को एक महत्त्वपूर्ण कदम माना जा रहा है। बहुपक्षीय रूपरेखा में दोनों के विचारों का अभिसरण वैश्विक महत्त्व के मुद्दों से निपटने के लिए महत्त्वपूर्ण है।

यह ध्यान रखना आवश्यक है कि भारत-फ्रांस की रणनीतिक तालमेल यूरोपीय परिप्रेक्ष्य में भी काफी महत्त्वपूर्ण है। यूरोपीय संघ के सुधारों तथा उसके निर्देशों को भविष्य में साकार करने में फ्रांस की भूमिका काफी महत्त्वपूर्ण होगी। फ्रांसीसी राष्ट्रपति मैक्रों ने यूरोपीय एकीकरण को मजबूत करने तथा वैश्विक मामलों में यूरोप की भूमिका को बढ़ाने के लिए कई सुधारों का प्रस्ताव दिया है। यूरोपीय संघ भारत का महत्त्वपूर्ण भागीदार है। फ्रांस के राष्ट्रपति मैक्रों ने नई

दिल्ली यात्रा के साथ-साथ 14वें भारत-यूरोपीय संघ शिखर सम्मेलन में शिरकत की। इसे भारत-यूरोपीय संघ सहयोग तथा उसके आर्थिक इंटरफेस को बढ़ाने में मजबूत दावे के रुप में देखा गया।

***

*डॉ. दिनोज कुमार उपाध्याय, शोध अध्येता,विश्व मामलों की भारतीय परिषद, नई दिल्ली।

डिस्क्लेमर: लेख में व्यक्त विचार शोध अध्येता के निजी विचार हैं तथा परिषद के विचारों को प्रतिबिम्बित नहीं करते।